प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method)

मनोविज्ञान का सबसे प्रमुख एवं वैज्ञानिक विधि प्रयोगात्मक विधि है। प्रयोगात्मक विधि उस विधि को कहा जाता है जिसका आधार प्रयोग होता है। प्रयोग साधारणतः किसी व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रिया को किसी नियंत्रित अवस्था में क्रमबद्ध अध्ययन या प्रेक्षण करना है। इस परिभाषा से स्पष्ट है कि प्रयोग में व्यवहारों का अध्ययन किसी नियंत्रित अवस्था में की जाती है। व्यवहारों का अध्ययन चरों के माध्यम से किया जाता है। चर किसी भी ऐसी घटना, परिस्थिति या व्यक्ति का गुण होता है जिनका मान परिवर्तनशील होता है। वैज्ञानिक अर्थ में चर वैसी घटना परिस्थिति या व्यक्ति का गुण होता है जिसे मापा जा सकता है तथा जो परिमाणात्मक रूप में परिवर्तित होता है। जैसे - उम्र, बुद्धि, थकान आदि कुछ चर के उदाहरण हैं जिन्हें मापा भी जा सकता है तथा जो परिमाणात्मक रूप से परिवर्तित भी होते हैं।

किसी भी मनोवैज्ञानिक प्रयोग में मुख्यतः तीन तरह के चर होते हैं — स्वतंत्र चर (Independent Variable), आश्रित चर (dependent Variable) तथा संगत चर (Relevant Variable) या नियंत्रण चर। स्वतंत्र चर वैसे चर को कहा जाता है जिसमें प्रयोगकर्ता जोड़-तोड़ करता है तथा जिसके प्रभाव को दूसरे चर पर अध्ययन भी किया जाता है। इसे नियंत्रित चर भी कहा जाता है।

आश्रित चर वैसे चर को कहा जाता है जिसके बारे में प्रयोगकर्ता प्रयोग करके पूर्वकथन करना चाहता है। इसे आश्रित चर इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें होने वाला परिवर्तन स्वतंत्र चर में किये गये जोड़-तोड़ पर निर्भर करता है। प्रायः मनोविज्ञान के प्रयोग में कुछ ऐसे भी चर होते हैं जिनके प्रभाव को प्रयोगकर्ता नियंत्रित करके रखता है क्योंकि वह आश्रित चर पर उन चरों के प्रभाव का अध्ययन नहीं करना चाहता है। इस तरह के चर को संगत चर या नियंत्रण चर कहा जाता है।